देव पूजा विधि Part-2 कलशस्थापन

जगदानन्द झा 1:42 am 5 टिप्पणियां

नोट- कलश स्थापन के पूर्व की विधि के लिए स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन पर क्लिक करें।

आचार्यादि वरण

हाथ में जल लेकर ॐ तत्स. तिथौ आचार्यादिऋत्विजां वरणमहं करिष्ये, आचार्य को पूर्वाभिमुख बैठाकर पाँव धोवें तथा गन्धाक्षत से पञ्चोपचार पूजन कर हाथ में वरण द्रव्य, जल और अक्षत लेकर दाहिने घुटने का स्पर्श करते हुए आचार्य वरण का संकल्प करें।

ॐ तत्सत् अमुकगोत्र प्रवरशाखान्वितयजमानोऽहम् अमुकगोत्रप्रवरशाखाध्यायिनममुकनामाचार्यम् अस्मिन् कर्तव्ये अमुकयागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। ऐसा आचार्य कहे। पुनः आचार्य के हाथ में निम्नलिखित मंत्र पढ़कर वरण हेतु मंगल सूत्र बांधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

पुनः वरण द्रव्य लेकर निम्न संकल्प पूर्वक ऋत्विक् का वरण करें। ॐ तत्स. अस्मिन् अमुककर्मणि ऋत्विग्त्वेन त्वामहं वृणे। ऋत्विक् कहे-वृतोऽस्मि।

पुनः प्रार्थना-

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्।।

पुनः ऋत्विक् के साथ आचार्य अपने आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम कर सङ्कल्प करें। ॐ तत्स. अस्मिन् कर्मणि यजमानेन वृतोऽहं आचार्य-(ऋत्विक्)-कर्म करिष्ये।
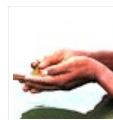
दिग् रक्षण

बायें हाथ में श्वेत सरसों अथवा अक्षत लेकर दिग्रक्षण करे।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
याम्ये रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋते।।
केशवो वारुणीं रक्षेद् वायव्यां मधुसूदनः।
उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशाने च गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्द्धनो रक्षेदधस्तात्तु त्रिविक्रमः।
एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।
यज्ञाग्रे पातु मा शंखः पृष्ठे पद्मन्तु रक्षतु।
वामपाश्र्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुदर्शनः।।
उपेन्द्रः पातु ब्राह्मणमाचार्यं पातुवामनः।
अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः।।
कृष्णो रक्षतु सामाख्यमथर्वाणन्तु माधवः।
विप्रा ये चोपदेष्टारस्तांश्च दामोदरोऽवतु।।
यजमानं सपत्नीक पुण्डरीकविलोचनः।
रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः।।

सरसों या अक्षत सभी दिशाओं में छींट दें।

भूतोत्सारण

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभेत्।।

उपर्युक्त श्लोक पढ़कर बायें हाथ, पाँव को तीन बार भूमि पर पटकें।

रक्षाबन्धन

यजमान तीन धागा वाला लाल सूत्रा एवं थोड़ा द्रव्य बायें हाथ में लेकर एवं दाहिने हाथ से ढककर 'ॐ हुं फट्' यह मंत्र तीन बार करके उस सूत्रा को गणपति के चरणों में निवेदित करें। पुनः गन्ध पुष्प से उसकी पूजा करें। फिर यह सूत्रा गणपति के अनुग्रह से प्राप्त हुआ ऐसा समझते हुए अन्य देवों को भी निवेदित करें। पुनः आचार्य सहित अन्य विप्रों के सीधे दाहिने हाथ में निम्न मंत्र से बांधे -

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

उसके बाद आचार्य भी यजमान के दाहिने हाथ में और यजमान पत्नी के बांयें हाथ में निम्न मंत्र पढ़ते हुए अभिमन्त्रित रक्षा सूत्र बांधें।

मन्त्र- ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य Ù शतानीकाय सुमनस्यमाना। तन्म आवध्नामि शतशारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्।।

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

खोज

लेखानुक्रमणी

► 2020 (23)
► 2019 (57)
► 2018 (63)
► 2017 (42)
► 2016 (32)
► 2015 (37)
▼ 2014 (106)
► दिसंबर (6)
► नवंबर (8)
► अक्तूबर (5)
► सितंबर (2)
► अगस्त (9)
► जुलाई (2)
► मई (4)
► अप्रैल (11)
▼ मार्च (40)
धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा...
संस्कृत काव्यों में छन्द
स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, एक समीक्षा

ॐ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

वरुण कलश स्थापन

हाथ में गन्ध, अक्षत और पुष्प लेकर पृथ्वी की पूजा करें-
ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं द Ů ह पृथिवीं माहि Ů सीः।
कलश स्थापित किये जाने वाली भूमि पर रोली से अष्टदल कमल बनाकर उत्तान हाथों से भूमि का स्पर्श करें-
ॐ महीद्यौः पृथिवी चन इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।
पुनः धान्यमसि मंत्र से जौ रखें-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घानुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वां महीनां पयोसि।।
कलश में स्वस्तिक का चिह्न बनाकर तीन धागेवाली मौली को उसमें लपेंटे। पुनः धातु या मिट्टी के कलश को जौ के ऊपर 'आ जिघ्र' इस मंत्र को पढ़कर स्थापित करें।-
ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशत्विंदवः। पुनरूर्ज्जा निवर्तस्वसानः। सहश्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः।।
कलश में जल डालें -ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।
इसके बाद कलश में क्रमशः मंत्र पढ़ते हुए अधोलिखित पूजा सामग्री को डालें।
कलश में गन्ध (रोरी) डालें -ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।
चन्दन लेपकर सर्वौषधि डालें। ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।।
धान्य डालें- ॐ धान्यमसि धिनुहि। इस पूर्वोक्त मंत्र से।
दूर्वा डालें- ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहश्रेण शतेन च।।
पंचपल्लव डालें- ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता गोभाज इत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम्।।
सप्तमृत्तिका डालें- ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शम्र्म सप्रथाः।
पूगीफल डालें- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व Ů हसः।।
पंचरत्न डालें-ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानि दाशुषे।।
दक्षिणा डालें-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
पवित्र कुश डालें-ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सविर्तुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रापते पवित्रापूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।
मौन रहकर पुष्प डालें। लाल वस्त्र या मौली कण्ठ में लपेटें-ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति साध्यो मनसा देवयन्तः।।
चावल से भरा पूर्ण पात्र कलश के ऊपर रखें

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ठ. शतक्रतो।।

रक्त वस्त्र से लिपटा नारियल-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रो पाश्र्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।
वरुण का आवाहन-ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुश कृ समान आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्ं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि। ध्यानम्-वरुणः पाशभूत्सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः। पाशहस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान्।।
हाथ में अक्षत पुष्प लेकर प्रतिष्ठा-ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठ. समिमं

मास्तु प्रतिलिपिः

दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ। ॐ वरुणाय नमः सुप्रतिष्ठितो वरदो भव
पुनः ॐ भूर्भुवः स्वः अपां पतये वरुणाय नमः इस मंत्र से पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजन कर ॐ तत्त्वायामि इस पूर्वोक्त मन्त्रा से पुष्पाञ्जलि अर्पित करे। ॐ अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम् जल छोड़ दें।
गङ्गा आदि नदियों का आवाहन-ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
पुनः कलश पर अक्षत छींटें।-ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कलशाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ समुद्राय नमः। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ कलशकुम्भाय नमः।
अनामिका से कलश का स्पर्श कर पढ़ें।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्रा गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः।।

ततः गायत्र्यादिभ्यो नमः इस मंत्र से पञ्चोपचार पूजन करें।
कलश प्रार्थना-

ॐ देवदानवसम्वादे मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विघृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदः।
त्वत्प्रसादादिदं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्लाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

जल लेकर-ॐ अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् यह पढ़कर जल छोड़ दें। इति कलशपूजाविधि।
नोट- आगे की विधि के लिए पुण्याहवाचन पर क्लिक करें

जगदानन्द झा
लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता,निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुडा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते है। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

5 टिप्पणियां:

bhadrakaali 29 अक्तूबर 2019 को 1:59 am

झा साहव अपने पेजों को डाउनलोडेवल बनाएं जो जनकल्याण हो ।

जवाब दें

उत्तर

Unknown 15 नवंबर 2019 को 5:54 am

इस टिप्पणी को एक ब्लॉग व्यवस्थापक द्वारा हटा दिया गया है.

जगदानन्द झा 16 नवंबर 2019 को 5:06 am

इसे डाउनलोड करने योग्य बनाने की विधि बता दें। क्या इसका पीडीएफ बनाकर उपलब्ध कराना होगा?

जवाब दें

Unknown 15 नवंबर 2019 को 5:53 am

Nice

जवाब दें

Unknown 11 अप्रैल 2020 को 12:53 am

अति सुन्दर भाई अपनी पोस्ट को डाउनलोड के योग्य बनाएं

जवाब दें

Followers (277) Next
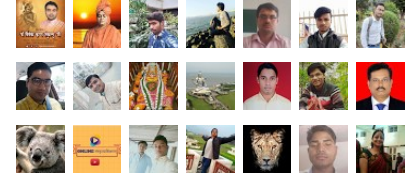
RECENT POSTS

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था

कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत शिक्षण का पाठ्यक्रम

काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 2)

काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 1)

काव्यप्रकाशः (नवम उल्लासः)

अव्यवस्थित सूची

संस्कृत की प्रतियोगिताएँ

श्रीमद्भागवत् की टीकायें

जनगणना 2011 में संस्कृत का स्थान

उत्तर प्रदेश के माध्यमिक संस्कृत विद्यालय

लेखाभिज्ञानम्

अंक | अभिनवगुप्त | अलंकार | आचार्य | आधुनिक संस्कृत | आधुनिक संस्कृत गीत | आधुनिक संस्कृत साहित्य | आम्बेडकर | उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान | उत्तराखंड | ऋग्वेद | ऋतु | ऋषिका | कणाद | करक चतुर्थी | करण | करवा चौथ | कर्मकाण्ड | कामशास्त्र | कारक | काल | काव्य | काव्यशास्त्र | काव्यशास्त्रकार | कुमाऊँ | कूर | कूर्मांचल | कृदन्त | कोजगरा | कोश | गंगा | गया | गाय | गीतकार | गीति काव्य | गुरु | गृह कीट | गोविन्दराज | ग्रह | चरण | छन्द | छात्रवृत्ति | जगत् | जगदानन्द झा | जगन्नाथ | जीवनी | ज्योतिष | तकनीकि शिक्षा | तद्धित | तिङन्त | तिथि | तीर्थ | दर्शन | धन्वन्तरि | धर्म | धर्मशास्त्र | नक्षत्र | नाटक | नाट्यशास्त्र | नायिका | नीति | पक्ष | पतञ्जलि | पत्रकारिता | पत्रिका | पराङ्कुशाचार्य | पाण्डुलिपि | पालि | पुरस्कार | पुराण | पुरुषार्थोपदेश | पुस्तक | पुस्तक संदर्शिका | पुस्तक सूची | पुस्तकालय | पूजा | प्रत्यभिज्ञा शास्त्र | प्रशस्तपाद | प्रहसन | प्रौद्योगिकी | बिल्हण | बौद्ध | बौद्ध दर्शन | ब्रह्मसूत्र | भरत | भर्तृहरि | भामह | भाषा | भाष्य | भोज प्रबन्ध | मगध | मनु | मनोरोग | महाविद्यालय | महोत्सव | मुहूर्त | योग | योग दिवस | रचनाकार | रस | राजभाषा